

1315/16 (E)

[This Question Paper contains 3 printed pages.]

SL. No. of Q. Paper 7569

आपका अनुक्रमांक

M.A. (एम.ए.)/ Sem. IV - 2016

HINDI (हिंदी) Paper-4042 (प्रश्नपत्र-4042)

मध्यकालीन दरबारी परम्परा का साहित्य

(वर्ष 2013 से 2016 तक के पाठ्यक्रमानुसार)

समय : 3 घंटे

पूर्णांक : 70

(इस प्रश्नपत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।)

नोट : प्रश्नपत्र पर अंकित पूर्णांक नियमित कॉलेजों (श्रेणी 'A') के विद्यार्थियों के लिए अनुप्रयोज्य हैं। तथापि ये अंक NCWEB के विद्यार्थियों के संबंध में उनके परिणाम के संकलन के लिए नियुक्त अधिनिर्णय के समय उनके आनुपातिक रूप में अधिक होंगे।

1. सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

- (क) जो हैं कहौं 'रहिजै' तौ प्रभुता प्रगट होति,
'चलन' कहौं तौ हित-हानि, नाहिं सहनै।
'भावै सो करहु' तौ उदास भाव प्राननाथ
'साथ लै चलहु' कैसे लोकलाज बहनै।
'केसोराइ' की सौं तुम सुनहु छबीले लाल,
चले ही बनत जौ पै नाहीं राजि रहनै।
तैसियै सिखावौ सीख तुम ही सुजान पिय,
तुमहिं चलत मोहिं कैसे कहू कहनै॥

अथवा

- (i) ओछे नर की प्रीति की दीनी रीति बताय।
जैसे छीलर ताल जल घटत घटत घटि जाय॥
(ii) कहा होय उद्यम किए जौ प्रभु ही प्रतिकूल।
जैसे उपजे खेत कौं करै सलभ निरमूल॥

(2)

- (ख) प्रान पियारो मिल्यो सपने में, परी जब नैसुक नींद निहारें।
कंत को आगम त्यों ही जगाय, कह्यो सखी बोल पियूष निचोरें।
मौं मतिराम भयो हिय मैं सुख बाल के बालम सौं दृग जोरें।
जैसे मिलीं पट में चटकीलो चढ़ै रंग तीसरी बार के बोरें॥

अथवा

सासन ही सों समीर गयो अरु आँसुन ही सब नीर गयो ढरि।
तेज गयो गुन लै अपनो अरु भूमि गई तनु की तनुता करि।
'देव' जिये मिलिबेई को आस कि आसहु पास अकास रहयो भरि।
जा दिन ते मुख फेरि हरे हौंस हेरि हियो जु लियो हरि जू हरि॥ 10,10

2. केशव की काव्यगत विशेषताओं का उद्घाटन कीजिए।

अथवा

नीति काव्य-परंपरा में वृंद का स्थान निर्धारित कीजिए। 12

3. मतिराम के काव्य-सौंदर्य पर प्रकाश डालिए।

अथवा

देव के आचार्यत्व पर प्रकाश डालिए। 12

(3)

4. पद्माकर के नायिका-भेद वर्णन की विशेषताओं को उद्घाटित कीजिए।

अथवा

भूषण की काव्य-कला का विवेचन कीजिए। 12

5. किन्हीं दो पर टिप्पणी लिखिए :

- (क) गिरिधर कविराय की कुंडलियाँ;
(ख) गंग कवि की सौंदर्य-चेतना;
(ग) भूषण की राष्ट्रीय-चेतना;
(घ) मध्यकालीन काव्य में शृंगार और विलासिता 7, 7